

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

26-अक्टूबर-2014 11:56 IST

**सर एच एन रिलायंस फाउंडेशन अस्पताल एवम् शोध केंद्र को राष्ट्र को पुनःसमर्पित करने के लिए आयोजित कार्यक्रम में,  
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गये भाषण का मूल पाठ**

उपस्थित सभी वरिष्ठ महानुभाव

आप सबको मेरी तरफ से दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं

गुजरात के लोग नया वर्ष भी मनाते हैं, उनको नववर्ष की शुभकामनाएं और आज बहनों का त्योहार है भाई दूज, तो सभी बहनों को मेरा प्रणाम।

आज पवित्र दिवस पर ...अस्पताल में जब मरीज जाता है तो कायाकल्प हो कर के बाहर आता है, लेकिन अस्पताल का ही कायाकल्प हो, ये बहुत कम होता है, और मैं आज देख रहा हूं कि 98 ईयर ओल्ड एक अस्पताल का कायाकल्प हुआ है। उसे एक नया जीवन मिला है। एक प्रकार से जीवन का एक नया आरंभ हो रहा है इस अस्पताल का। इस काम को करने के लिए नीता बहन को और रिलायंस फाउंडेशन को मैं हृदय से बहुत बहुत बधाई देता हूं।

हमारे देश में, जब दुनिया के साथ comparison होता है, तो आरोग्य के क्षेत्र में बहुत सी बातें ऐसी हो, जिसमें हमें शर्मिंदगी महसूस करनी पड़ती है। आज हमारे यहां जन्म के साथ मरने वाले बच्चों की संख्या बहुत चिंताजनक है। प्रसूता माताओं के मरने की संख्या बहुत चिंताजनक है। कोई एक बच्चा अगर बोरवेल में गिर जाए तो देश भर के मीडिया के लोग वहां पहुंच जाते हैं, running commentary देते हैं। वह हिल रहा है, सांस की आवाज आ रही है, रोने की आवाज आ रही है और हर परिवार खाना-वाना छोड़ कर के टीवी स्क्रीन के सामने बैठ जाता है और जब तक वह बच्चा जिंदा नहीं निकलता है, एक मायूसी का माहौल रहता है। एक बच्चा बोरवेल में गिर जाए, देश परेशान हो जाता है।

लेकिन हमें पता होता है कि हमारे अगल बगल में सैकड़ों की तादाद में बच्चे जन्म के साथ ही मृत्यु की शरण में पहुंच जाते हैं। कभी बालक मर जाता है, कभी मां और बालक दोनों मर जाते हैं। कारण- जो प्राथमिक सुविधाएं चाहिए, उसका अभाव है, और तब जा कर के , समाज और सरकार मिल कर के, जिसे हम प्राथमिकता दे कर के गरीब से गरीब व्यक्तिको आरोग्य की सुविधाएं कैसे उपलब्ध हों, उस दिशा में जितने प्रयत्न हम करें, वह कम है। उसमें आज एक आधुनिक स्वरूप में इस अस्पताल का मध्यमवर्गीय गरीब परिवारों के लिए बहुत उपकारक सिद्ध होगा।

आज मेडिकल साइंस का रूप बहुत बदल चुका है, और आने वाले दिनों में बहुत तेजी से बदलने वाला है। धीरे-धीरे डाक्टरों की expertise, medical equipments ले रहे हैं। ज्यादातर equipment तय कर देता है कि आपकी क्या तकलीफ है। बाद में डाक्टर के हाथ case जाता है। और equipments के क्षेत्र में इतनी कठिनाई है, इतने costly equipments हैं, कि सामान्य अस्पतालों में इसको लगाना बड़ा मुश्किल है। हमने एक initiative लिया है, 'मेक इन इंडिया'। क्यूं ना हमारे देश में मेडिकल के लिए आवश्यक जो equipment है, उस industry को बढ़ावा मिले, Foreign Direct Investment आए, और हमारे देश में इस प्रकार के साधन manufacture होते हैं तो दूर-दराज गांव तक बहुत कम खर्च में इन व्यवस्थाओं को उपलब्ध किया जा सकता है।

आज के Information Technology के युग में Tele-Medicine के माध्यम से Expert Opinion के लिए कहीं दूर-दराज क्षेत्र में भी, पहाड़ों में भी रहने वाले व्यक्तिके लिए अगर ये नेटवर्क के साथ जोड़ा जाए तो अच्छी से अच्छी सेवा उपलब्ध की जा सकती है। भारत सरकार ने एक 'डिजिटल इंडिया' का बीड़ा उठाया है, उसका मूल जो फायदा होना है, वह एक Tele-Medicine के माध्यम से गरीब से गरीब पेशेंट को अच्छी सुविधा कैसे मिले, और दूसरा गरीब से गरीब बालक को अच्छी शिक्षा कैसे मिले। आज के Technology के माध्यम से ये संभव हुआ है और उस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं और आने वाले दिनों में जरूर उसके अच्छे परिणाम मिलेंगे।

आरोग्य के क्षेत्र में यह माना हुआ है कि Preventive Healthcare हम कितने अच्छे तरीके से करते हैं, उस पर ही हमारी

आरोग्य की संभावनाएं रहती हैं। बीमार होने के बाद ठीक होने में खर्चा बहुत ज्यादा लगता है, लेकिन बीमार न होने के लिए बहुत कम Investment होता है। लेकिन उस कम Investment में हमारी वृत्तिकम रहती है। व्यक्ति के जीवन में भी Preventive Health Care के विषय में जितनी consciousness चाहिए, जितनी awareness चाहिए, और जितनी सुविधाएं चाहिए, वह नहीं होती।

अगर व्यक्ति को पीने को शुद्ध पानी मिल जाए तो भी हेल्थ सेक्टर में बहुत तेजी से सुधार आ सकता है, पीने का शुद्ध पानी। मैं अपना अनुभव बताता हूं, आप लोगों ने आज से दस साल पहले साबरमती नदी देखी होगी तो, और किसी बच्चे को कहा जाए कि साबरमती पर essay लिखो तो वह लिखता था कि नदी में बालू होती है, सर्कस के टेंट लगते हैं, क्रिकेट खेलने के लिए अच्छी जगह होती है। क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि वहां पानी होता था, नदी में पानी होता है, ये साबरमती के तट पर रहने वालों को पता नहीं था। जब उसको नर्मदा नदी के पानी से जोड़ा गया, और साबरमती नदी को जिंदा किया गया, Riverfront बनाया गया। दुनिया की नजरों में तो इतना ही है कि वाह, Riverfront बहुत अच्छा लगता है, हिन्दुस्तान में पहला Riverfront बना, लेकिन वहां जो और उपयोग हुआ, उसके कारण Rainwater Harvesting हुआ, पानी का सिंचन हुआ, जब नर्मदा का पानी आया, water level ऊपर आया। पूरे शहर का जो water level ऊपर आने के कारण जो म्यूनिसिपल कारपोरेशन का बिजली का बिल पर ईयर 15 करोड़ रुपये कम हो गया तो वे और खुश हो गए। अब ये लोगों के नजर में तो है कि पानी आया, अच्छा लगता है। जरा सैर करने में ठीक लगता है। लेकिन सबसे बड़ी बात, जिन लोगों ने, आज से दस साल पहले, बारह साल पहले का अखबार देखेंगे, अगर पांच दिन, सात दिन भी बारिश ज्यादा रहती थी तो अस्पताल की तस्वीरें अखबार में छपती थीं। पेशेंट के लिए जगह नहीं थी, वहां के कोरिडोर के अंदर पेशेंट पड़े हुए हैं और epidemic का हाल बन जाता था।

गरीब परिवार को सबसे बड़ी मुसीबत होती है। अगर ज्यादा गर्मी हो तो गरीब मरेगा, ज्यादा ठंड हो तो गरीब मरेगा, ज्यादा बारिश हो तो गरीब मरेगा। सारी मुसीबतें अगर किसी को झेलनी पड़ती है तो गरीब को झेलनी पड़ती है। और अगर गरीब बीमार होता है सिर्फ इंसान बीमार नहीं होता है, गरीब बीमार होता है तो पूरा परिवार बीमार हो जाता है। अगर ऑटो रिक्शा चलाता है और वह बीमार हो गया, तीन दिन तक पूरा घर भूखा मरता है। लेकिन ये पानी के कारण, वाटर लेबल ऊपर आने के कारण शुद्ध पानी की संभावना पैदा हुई, Fluoride से मुक्त पानी की संभावना पैदा हुई, दस साल में एक भी epidemic का अनुभव अहमदाबाद ने नहीं किया था।

कहने का तात्पर्य ये है कि पीने का शुद्ध पानी, इस पर हम जितना बल दें, वह आरोग्य के लिए उतना अच्छा है। ज्यादातर हमारे यहां बच्चे, अभी मैंने एक रिपोर्ट पढ़ा था कि पाकिस्तान में जो बच्चे मरते हैं, उनमें से 40 फीसदी बच्चों के मरने का कारण ये था कि वे खाने से पहले हाथ नहीं धोते। अब ये स्वभाव सिर्फ पाकिस्तान में ही होगा, ऐसा नहीं है। हम भी तो वो ही हैं, हममें क्या अलग है, हमारी तो पुरानी विरासत एक ही है।

इसलिए मैं मध्य प्रदेश सरकार को ये बधाई देता हूं, उसने एक बड़ा अभियान चलाया, बच्चों को सामूहिक रूप से, साबुन से उनके हाथ धोने का कार्यक्रम किया। उन्होंने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में नाम दर्ज कराया कि एक समय में एक साथ लाखों बच्चों ने हाथ धोये। एक बहुत बड़ा वर्ग है जिसको ये लगेगा कि ये क्या हो रहा है। ये देश के लिए कर रहे हैं, ये देश यहीं से शुरू करना पड़ेगा, इसकी आवश्यकता पैदा हुई है। इसलिए हम इस दिशा में कैसे आगे बढ़ें?

अभी मैं United Nations में गया था, पहली बार बोलने का मौका मिला, और मैंने एक बात कही कि क्यों ना हम International Yoga Day मनाएं। मैं लगा हूं पीछे, हो सकता है कि UN इसको स्वीकार करे। Holistic Healthcare पूरी दुनिया के अंदर एक बहुत बड़े आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। अच्छे से अच्छे डॉक्टर भी होमियोपैथिक की ओर जा रहे हैं। Holistic Healthcare का मूड बना रहे हैं। स्ट्रेसयुक्त लाइफ में से stress free life की ओर जाने के लिए मूड बना रहे हैं। और दुनिया को सही चीज कैसे मिले, अगर हमारे पास ऐसे विरासत हैं तो इसको कैसे दिया जा सके। उस दिशा में हम अगर प्रयास करते हैं तो हम अपना तो कल्याण कर ही सकते हैं, लेकिन औरों का भी कल्याण कर सकते हैं।

आज भी विश्व में भारत के डाक्टरों की इतनी प्रतिष्ठा है, कि जिन देशों में भारतीय डाक्टरों का अनुभव है, थोड़ी बहुत जानकारी है, वहां के पेशेंट इस बात में हमेशा इच्छुक रहते हैं कि ऑपरेशन थियेटर में जाने से पहले उन्हें कोई इंडियन डाक्टर का चेहरा दिखाई दे। जिस पल वह इंडियन डाक्टर का चेहरा देखता है, उसका confidence एकदम से बढ़ जाता है। उसको लगता है कि अब चिंता नहीं है, अब शरीर उनको सौंप दो। यह इज्जत हमारे डाक्टरों ने अपने कौशल-पुरुषार्थ से कमाई है।

हमारा अपना ये कौशल्य है, अब मेडिकल साइंस में हम नए नहीं हैं। अभी नीता बहन, धन्वंतरी की बात कर रही थी, हमारे देश में एक जमाना था, गांव में एक वैद्यराज हुआ करते थे और पूरा गांव स्वस्थ होता था। बीमारी गांव में घुस नहीं

सकती थी, एक वैद्यराज था। आज हर क्षेत्र के specialised हैं, और मुझे लगता है कि आने वाले दिनों में ये speciality आगे बढ़ने वाली है। बायें हाथ का specialist अलग होगा, दायें हाथ का specialist अलग होगा। Right Eye को कोई और देखता होगा, Left Eye को कोई और देखता होगा, यहां तक हम आगे बढ़ने वाले हैं।

एक वैद्यराज, क्या कारण था कि पूरे गांव को स्वस्थ रखता था, और आज इतने Specialists होने के बावजूद भी हम और-और संकटों से गुजरते जा रहे हैं। हम Preventive Healthcare पर बल दें, हमारी lifestyle पर बल दें, हम खुद अपने life को respect करना शुरू करें तो हो सकता है कि हमें इस प्रकार की व्यवस्थाओं की आवश्यकता ही न हो। और ये सब संभव है, मुश्किल काम नहीं है।

मेडिकल साइंस की दुनिया में हम गर्व कर सकते हैं, हमारा देश किसी समय क्या था। महाभारत में कर्ण की कथा, हम सब कर्ण के विषय में महाभारत में पढ़ते हैं। लेकिन कभी हमने थोड़ा सा और सोचना शुरू करें तो ध्यान में आएगा कि महाभारत का कहना है कि कर्ण मां की गोद से पैदा नहीं हुआ था, इसका मतलब ये हुआ कि उस समय Genetic Science मौजूद था। तभी तो कर्ण, मां की गोद के बिना उसका जन्म हुआ होगा।

हम गणेश जी की पूजा करते हैं, कोई तो प्लास्टिक सर्जन होगा उस जमाने में, जिसने मनुष्य के शरीर पर हाथी का सर रख कर के प्लास्टिक सर्जरी का प्रारंभ हुआ होगा। अनेक ऐसे क्षेत्र होंगे जहां हमारे पूर्वजों ने बहुत सारा योगदान दिया होगा। और कुछ बातों को तो हमने स्वीकार किया है। आज अगर Space Science को देखें तो हमारे पूर्वजों ने Space Science में बहुत बड़ी ताकत दिखाई थी किसी समय। उस समय सदियों पहले आर्यभट्ट जैसे लोगों ने जो बातें कही थी, आज विज्ञान उसको स्वीकार करने में..., सफलतापूर्वक उसकी मान्यता हो गई है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह वो देश है, जिसके पास ये सामर्थ्य रहा था। इसको हम फिर कैसे दोबारा regain करें।

जैसे अस्पताल का कायाकल्प हुआ है, भारत का भी कायाकल्प भी संभव है, और उस सपनों को पूरा करने के लिए अगर हम प्रयास करें, और मुझे विश्वास है कि जिन initiative को लेकर के हम आगे बढ़ रहे हैं और मैं जब ये बातें कहता हूं तो ये बात मैं साफ करता हूं, मैं उस सोच का इंसान नहीं हूं जो कहे कि पहले की सरकारों ने कुछ नहीं किया। मैं ऐसी सोच रखने वाला इंसान नहीं हूं। हर एक ने अपने-अपने कार्यकाल में कुछ न कुछ अच्छा काम किया है। जिस समय जैसी जिम्मेवारी है, और और उमंग के साथ, और अच्छी सोच के साथ आगे बढ़ाना होता है।

हमारी कोशिश है कि अगर देश को आगे बढ़ाना है, तो सरकार सबकुछ करेगी, इस विचार से आगे बढ़ना होगा। सबको मिल कर के कुछ करना होगा, तब जाकर के देश आगे बढ़ेगा। सवा सौ करोड़ का देश है, क्या कुछ नहीं कर सकता। जब मैं Mars की बात करता हूं, अगर मुंबई के अंदर आटो रिक्शा में जाना है तो एक किलोमीटर का खर्चा दस बारह रुपये होता होगा, हम Mars पर गए, सात रुपये किलोमीटर का खर्चा आया। ये भी हमारे वैज्ञानिकों की ताकत है, और वो सात रुपये का खर्चा है लेकिन आने वाले कई वर्षों तक काम करने वाला है। जा कर के सोने वाला नहीं है।

कहने का तात्पर्य यह है कि देश में जो बहुत ऊर्जा है, सामर्थ्य पड़ा है, उस सामर्थ्य को लेकर के हम आगे बढ़ें। और इस देश की सोच देखिए, अभी नीता बहन हमारी सर्वे भवन्तु सुखिनः का मंत्र बोल रही थीं, मैं मानता हूं, हिन्दुस्तान की कोई भी पोलिटिकल पार्टी हो या दुनिया की कोई भी पोलिटिकल पार्टी हो, अगर पोलिटिकल पार्टी को one line agenda लिखना है, अपना Manifesto लिखना है, तो इससे बड़ा कोई Manifesto नहीं हो सकता है जो कहता है - सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिददुःखभागभवेत् । यानी सबकी स्वास्थ्य की यहां कल्पना की गई है, सबके सुख की कल्पना की गई है, सबके शांतिपूर्ण जीवन की कल्पना की गई है, जगत के लिए इससे बड़ा कोई Manifesto नहीं हो सकता है, जो वेदकाल से मानव जाति के लिए दिया गया है। उस Manifesto को लागू करने के लिए भारत का दायित्व और ज्यादा है।

भारत का दायित्व जब ज्यादा है तब... हमारे यहां राजा की कल्पना की गई है और राजा रन्ध्रदेव ने इसकी व्याख्या की है। शास्त्रों ने कहा है, राजा के कर्तव्य का वर्णन करते हुए- ना त्वहम कामयेव राज्यम्, ना स्वर्गम्, ना पुनर्भावम्, कामयेव दुःखः तप्तनाम, प्राणिनः अत्रिणष्टम। यानी न मुझे राज्य की कामना है, न मुझे मोक्ष की कामना है, न मुझे पुनर्जन्म की कामना है, अगर कामना है तो गरीब के आंसू पोछने की कामना है। ये भारत की परंपरा रही है, उस परंपरा को लेकर के हम अगर आगे चलते हैं तो मुझे विश्वास है Health Insurance से Health Assurance की यात्रा लंबी है, कठिन है, सिर्फ स्पेलिंग बदलने से होने वाला वो काम नहीं है, बहुत बड़ी साधना करनी होगी। उस साधना करने का संकल्प लेके आप सबसे आशीर्वाद मिले, शुभकामनाएं मिले, जरूर सफल होंगे।

मैं नीता जी को बहुत बहुत बधाई देता हूं, शुभकामनाएं देता हूं, अंबानी परिवार को शुभकामनाएं देता हूं। और मुझे अच्छा

ये लगा कि उनके मोबाइल के द्वारा गरीबों के सेवा करने का बड़ा अभियान चल रहा है। नीता बहन मुझसे मिलीं तो मैंने उनसे कहा कि उसका जितना ज्यादा उत्थान करोगी, उतना ज्यादा समाज की ज्यादा सेवा होगी।

मैं उनको बहुत बहुत बधाई देता हूँ।

आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*

धीरज सिंह / अमित कुमार / शिशिर चौरसिया

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

20-अक्टूबर-2014 17:27 IST

**अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के 42वें दीक्षांत समारोह के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का मूल पाठ**

मंत्रिपरिषद के मेरे साथी डॉ. हर्षवर्द्धन, मंचस्थ सभी महानुभाव और आज के दिवस के केंद्र बिन्दु वे सभी डिग्रीधारी जो आज इस कैंपस को छोड़ करके एक नई जिम्मेदारी की ओर कदम रख रहे हैं।

मैं आप सबको हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

मैं कभी अच्छा स्टूडेंट नहीं रहा हूँ, और न ही मुझे इस प्रकार से कभी अवॉर्ड प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। इसलिए मुझे बहुत बारीकियों का ज्ञान नहीं है। लेकिन इतनी समझ जरूर है कि विद्यार्थी का जब Exam होता है, उस हफ्ते बड़ा ही टेंशन में रहता है, बड़ा ही गंभीर रहता है। खाना भी जमता नहीं, बड़े तनाव में रहता है। लेकिन आज एक प्रकार से वो सारी झंझटों से मुक्ति का पर्व है और आप इतने गंभीर क्यों हैं?

मैं कब से देख रहा था, कि क्या कारण है यहां! क्या, मिश्राजी, क्या कारण है? मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप अपने दायित्व पर उससे भी ज्यादा गंभीर हों - अच्छी चीज है - लेकिन जीवन को गंभीर मत बना देना। जिंदगी को हंसते-खेलते, संकटों से गुजरने की आदत बनाते हुए चलना, और उसका जो आनंद है, वह बड़ा ही अलग होता है। हमारे देश में, अगर पुराने शास्त्रों की तरफ देखें, तो पहला convocation, इसका उल्लेख तैत्रेय उपनिषद में आता है। वेद काल में गुरु-शिष्य जब परंपरा थी, और शिष्य जब विद्यार्थी काल समाप्त करके जाता था, तो उसका प्रथम उल्लेख तैत्रेय उपनिषद में आता है कि कैसे Convocation की क्या कल्पना थी।

वो परंपरा अब भी चल रही है, नए रंग-रूप के साथ चल रही है। मेरा एक-दो सुझाव जरूर है। क्या कभी हम इस Convocation में एक Special guest की परंपरा खड़ी कर सकते हैं क्या? और Special guest का मेरा मतलब है कि गरीब बस्ती में जो Schools हैं, गरीब परिवार के बच्चे जहां पढ़ते हैं, ऐसे एक Selected 8वीं 9वीं कक्षा के बच्चे, 30, 40, 50 जो भी आपकी Capacity में हो, उनको ये Convocation में Special guest के रूप में बुलाया जाए, बिठाया जाए, और वे देखें, ये दुनिया क्या है। जो काम शायद उसका टीचर नहीं कर पाएगा, उस बालक मन में एक घंटे-डेढ़ घंटे का ये अवसर उसके मन में जिज्ञासा पैदा करेगा। उसके मन में भी सपने जगाएगा। उसको भी लगेगा कि कभी मेरी जिंदगी में ये अवसर आए।

आप कल्पना कर सकते हैं, कितना बड़ा इसका impact हो सकता है। चीज बहुत छोटी है। लेकिन ताकत बहुत गहरी है और यही चीजें हैं जो बदलाव लाती हैं। मेरा आग्रह रहेगा, वे गरीब बच्चे। डॉक्टर का बच्चा आएगा तो उसको लगेगा कि मेरे पिताजी ने भी ये किया है, उसको नहीं लगेगा। समाज जीवन में अपने सामान्य बातों से हम कैसे बदलाव ला सकते हैं। उस पर हम सोचें। जो डॉक्टर बनकर आज जा रहे हैं, अपने जीवन में अचीवमेंट किया है, मेरे जाने के बाद भी शायद हर्षवर्द्धन जी कईयों को अवॉर्ड देने वाले हैं, सर्टिफिकेट देने वाले हैं। लेकिन आज आप जा रहे हैं, बीता हुआ कल और आने वाला कल के बीच कितना बड़ा अंतर है।

आपने जब पहली बार AIIMS में कदम रखा होगा तो घर से बहुत सारी सूचनाएं दी गई होंगी, मां ने कहा होगा, पिताजी ने कहा होगा। चाचा ने कहा होगा, देखो ऐसा करना, ऐसा मत करना। ट्रेन में बैठे होंगे तो कहा होगा कि देख खिड़की के बाहर मत देखना। कोई अनजान व्यक्ति कुछ देता है तो मत लेना। बहुत कुछ कहा होगा। एक प्रकार से आज भी वही पल है। Convocation एक प्रकार से आखिरी कदम रखते समय परामर्श देने का एक पल होता है।

कभी आप सोचे हैं कि जब आप क्लासरूम में थे, Institute में थे, जब आप पढ़ रहे थे, तब आप कितने protected थे? कोई कठिनाई आई तो सीनियर साथी मिल जाता था, बताता था। समाधान नहीं हुआ तो प्रोफेसर मिल जाते थे। प्रोफेसर नहीं मिले तो डीन मिल जाते थे। बहुत avenues रहते थे कि जहां पर आप आपकी समस्याओं का, आपकी जिज्ञासा का समाधान खोज सकते थे। आप कभी यहां काम करते थे, आपका हॉस्टल लाइफ रहा होगा। परिवार का कोई नहीं होगा, जो

आपको हर पल ये कहता होगा, ये करो, ये मत करो। लेकिन कोई तो कोई होगा आरे यार क्या कर रहे हो भाई ? किसी ने कहा होगा भाई तुम्हारे पिताजी ने कितनी मेहनत करके भेजा है, तुम ये कर हो क्या ? बहुत कुछ सुना होगा आपने। और तब आपको बुरा भी लगा होगा कि क्या ये मास्टर जी देते हैं, हमें मालूम नहीं है क्या हमारी जिंदगी का? लेकिन कोई तो था जो आपको कहता था कि ये करो, ये मत करो।

आप उस अवस्था से गुजरे हैं और काफी लंबा समय गुजरे हैं, जहां, आपको स्वयं को निर्णय करने की नौबत बहुत कम आई होगी और निर्णय करने की नौबत आई होगी, तब भी protected environment में आई होगी, जहां पर आपको पूरा Confidence था कि मेरे निर्णय को इधर-उधर कुछ भी हो जाएगा तो कोई तो बैठा है जो मुझे मदद करेगा, बचा लेगा मुझे या मेरा हाथ पकड़ लेगा। इसके बाद आप एक ऐसी दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं, जहां कोई आपका हाथ पकड़ने वाला नहीं है। जहां पर कोई आपको ये करो, ये मत करो, कहने वाला नहीं है। जहां आपका कोई protected environment नहीं है। आप एक चारदीवारी वाले classroom से एक बहुत बड़े विशाल classroom में enter हो रहे हैं। और तब जाकर के एकलव्य की मानसिकता आवश्यक होती है। एकलव्य को protected environment नहीं मिला था, लेकिन उसका लक्ष्य था achievement का। और उसने अपने काल्पनिक सृष्टि की रचना की और काल्पनिक सृष्टि के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने का प्रयास किया था।

जिस पल, खास करके medical protection के लोग या professional क्षेत्र में जाने वाले लोग, विद्यार्थी काल की समाप्ति मानते हैं, मैं समझता हूं, अगर हमारे मन में यह अहसास हो कि चलो यार, छुट्टी हुई, बहुत दिन बिता लिए। वही Hostel, वहीं gown, वहीं stethoscopes, इधर दौड़ो, उधर दौड़ो। चलो मुक्ति हो गई। जो ये मानता है कि आज end of the journey है उसकी और एक नई journey में entry कर रहा है, मैं समझता हूं, अगर ये मन का भाव आया, तो मेरा निश्चित मत है, कि आप ठहराव की ओर जा करके फंस जाएंगे। रुकावटों की झंझटों में उलझ जाएंगे।

लेकिन अगर आप एक बंद classroom से एक विशाल classroom में जा रहे हैं। विद्यार्थी अवस्था भीतर हमेशा रहती है। जिन लोगों को आज सम्मानित करने का सौभाग्य आज मिला, 70-80 साल की आयु वाले सभी हैं। लेकिन अज उनसे आप मिलेगा तो मुझे विश्वास है, आज भी medical science के latest Development के बारे में उनको पता होगा। इसलिए नहीं कि उनको किसी पेशेंट की जरूरत है, इसलिए कि उनके भीतर का विद्यार्थी जिंदा है। जिसके भीतर का विद्यार्थी जिंदा होता है, वही जीवन में कुछ कर पाता है, कर गुजरता है। लेकिन अगर यहां से जाने के बाद इंस्टीट्यूट पूरी हुई तो विद्यार्थी जीवन भी पूरा हुआ। अगर ये सोच है तो मैं समझता हूं कि उससे बड़ा कोई ठहराव नहीं हो सकता है। विद्यार्थी अवस्था, मन की विद्यार्थी अवस्था जीवन के अंत काल तक जीवन को प्राणवान बनाती है, ऊर्जावान बनाती है। और जिस पल मन की विद्यार्थी अवस्था समाप्त हो जाती है, मृत्यु की ओर पहला कदम शुरू हो जाता है।

अभी मैं आया तो वो सज्जन बता रहे थे, कि लोगों को अचरज है, मोदीजी की energy का। अचरज जैसा कुछ है नहीं, आप लोग medical science के लोग हैं, थोड़ा इतना जोड़ दीजिए, हर पल नया करने की, सीखने की इच्छा आपके भीतर की ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होती है। कभी energy समाप्त नहीं होती। आपकी स्थिति कुछ और भी बनेगी, जब आप hostel में रहते होंगे, OPD में आपको कई पेशेंट को डील करना होता होगा। कभी दोपहर को दोस्तों के साथ मूवी देखना तय किया है तो मन करता था कि OPD ऐसा करो निकालो। हमें सिनेमा देखने जाना है। मैं आपकी बात नहीं बता रहा हूं, ये तो मैं कहीं और की बात बता रहा हूं।

आपने पेशेंट को कहा होगा ये खाना चाहिए, ये नहीं चाहिए। इतना खाना चाहिए, इतना नहीं खाना चाहिए। लेकिन जैसे ही आप मेस में पहुंचते होंगे, सब साथियों ने मिलके स्पर्धा लगाई होगी, आज तो special Dish है। Sweet है, देखते हैं कौन ज्यादा खाता है। ये सब किया होगा। और वही तो जिंदगी होती है, दोस्तो। लेकिन आपने किसी को कहा होगा, ये खाओ, ये मत खाओ। तब जा करके अपनी आत्मा से पूछा है, मैंने उसको तो ये कहा था, मैं ये कर रहा हूं। इसलिए सफलता की पहली शर्त होती है। कल तक की बात अच्छी थी, किया, अच्छा किया। मैं उसको appreciate करता हूं। लेकिन आने वाले कल में, मैं कैंसर का डॉक्टर हूं और शाम को धुआधार सिगरेट जलाता रहता हूं और मैं दुनिया को कहूंगा कि भाई इससे कैंसर होता है तो किसी को गले नहीं उतरेगा। ऊपर से हम एक उदाहरण बन जाएंगे- हां यार, कैंसर के डॉक्टर सिगरेट पीते हैं तो मुझे क्या फर्क पड़ता है।

इसलिए मैं एक ऐसे व्यवसाय में हूं, मैं एक ऐसे क्षेत्र में कदम रख रहा हूं, जहां मेरा जीवन मेरे पेशेंट की जिंदगी बन सकता है। शायद हमने बहुत कम लोगों ने सोचा होगा कि क्या एक डॉक्टर का जीवन एक पेशेंट की जिंदगी बन सकता है? आप कभी सोचना, आपका हर मिनट, हर बात, हर संपर्क पेशेंट की जिंदगी बन सकती है। कभी सोच करके देखिए, बहुत कम लोग हैं, जो जीवन को इस रूप में देखते हैं। मैं आशा करता हूं, आज जो नई पीढ़ी जा रही है, वो इस पर सोचेगी।

उसी प्रकार से, हम डॉक्टर बने हैं, कभी अपनी ओर देखें - क्या आपके पिताजी के पास पैसे थे, इसलिए आपने पाया? क्या आपके प्रोफेसर बहुत अच्छे थे, इसलिए ये सब हुआ? क्या सरकार ने बहुत बढ़िया इमारत बनाई थी, AIIMS बन गया था, इसके कारण हुआ? आप थोड़े मेहनती थे, इसलिए हुआ? अगर यही सोच हमारी सीमित रही तो शायद जिंदगी की ओर देखने का दृष्टिकोण पूर्णता की ओर हमें नहीं ले जाएगा। कभी सोचिये, यहां पर जब आप पहले दिन आए होंगे तो एक ऑटो-रिक्शा वाला या टैक्सी वाला होगा जिसने आपकी मदद की होगी। बहुत अच्छे ढंग से यहां लाया होगा, पहली बार दिल्ली में कदम रखा होगा, बहुतों ने। तो क्या आज स्थिति को प्राप्त करते समय आपकी जीवन की यात्रा का पहला चरण जिस ऑटो ड्राइवर के साथ किया, या उस टैक्सी वाले के साथ किया, क्या कभी स्मरण आता है?

Exam के दिन रहे होंगे, थकान महसूस हुई होगी, रात के 12 बजे पढ़ते-पढ़ते कमरे से बाहर निकले होंगे, ठंड का मौसम होगा और एक पेड़ के नीचे कोई चाय बेचने वाला बैठा होगा। आपका मन करता होगा, चाय मिल जाए तो अच्छा हो, क्योंकि रात भर पढ़ना है। और उस ठंडी रात में सोये हुए, उस पेड़ के नीचे सोये हुए उस चाय बेचने वाले को आपके जगाया होगा, कि चाय पिला दे यार। और उसने अपना चेहरा बिगाड़े बिना, आप डॉक्टर बने इसलिए, आपका Exam अच्छा जाए, इसलिए, ठंड में भी जग करके कहीं से दूध लाके आपको चाय पिलाई होगी। तब जा करके आपकी जिंदगी की सफलता का आरंभ हुआ होगा।

कभी-कभार एकाध peon भी, कोई paramedical staff का बूढ़ा व्यक्ति, जिसके पास जीवन के अनुभव वा तर्जुबा रहा होगा, उसने कहा होगा, नहीं साब, सिरीज को ऐसे नहीं पकड़ते हैं, ऐसे पकड़ते हैं। हो सकता है, classroom का वह teacher नहीं होगा, लेकिन जिंदगी का वह Teacher बना होगा। कितने-कितने लोग होंगे, जिन्होंने आपकी जिंदगी को बनाया होगा। एक प्रकार से बहुत बड़ा कर्ज लेकर के आप जा रहे हैं।

अब तक तो स्थिति ऐसी थी कि कर्ज लेना आपका हक भी था, लेकिन अब कर्ज चुकाना जिम्मेवारी है। और इसलिए भली-भांति उस हक का उपयोग किया है, अच्छा किया है। लेकिन अब भली-भांति उस कर्ज को चुकाना हमारा दायित्व बन जाता है। और उस दायित्व को हम पूरा करें। मुझे विश्वास है कि हम समाज के प्रति हमारा दायित्व अपने profession में आगे बढ़ते हुए भी निभा सकते हैं। आप अमीर घर के बेटे हो सकते हैं, गरीब परिवार के बेटे हो सकते हैं, मध्यम वर्ग के परिवार के बेटे / बेटा हो सकते हैं, लेकिन क्या कभी सोचा है कि आपकी पढ़ाई कैसे हुई है? क्या आपके फीस के कारण पढ़ाई हुई है? नहीं, क्या scholarship के कारण हुई है? नहीं।

इन व्यवस्थाओं का विकास तब हुआ होगा, जब किसी गरीब के स्कूल बनाने का बजट यहां divert हुआ होगा। किसी गांव के अंदर बस जाए तो गांव वालों की सुविधा बढ़े, हो सकता है कि वह बस चालू नहीं हुई होगी, वह बजट यहां divert किया गया होगा। समाज के कई क्षेत्रों के विकास की संभावनाओं को रोक करके इसे develop करने के लिए कभी न कभी प्रयास हुआ होगा। एक प्रकार से उसका हक छिन कर हमारे पास पहुंचा है, जिसके कारण हम लाभान्वित हुए हैं। और ये जरूरत थी, इसलिए यहां करना पड़ा होगा। क्योंकि अगर इतने बड़े देश में medical profession को बढ़ावा नहीं देते हैं तो बहुत बड़ा संकट आ सकता है, अनिवार्य रहा होगा। लेकिन कोई तो कारण होगा कि समाज के किसी न किसी का हक मैंने लिया है, तब जाकर आज इस स्तर तक पहुंचा हूं। क्या मैं हर पल अपने जीवन में उस बात को याद करूंगा कि हां भाई, मैं सिर्फ डॉक्टर बना हूं, ऐसा नहीं है? ये मेरे सामने आया हर व्यक्ति किसी न किसी तरीके से योगदान दिया है, तब जाकर मैं इस अवस्था को पहुंचा हूं। मुझ पर उसका अधिकार है।

मैं नहीं जानता हूं, जो लोग यहां से पढ़ाई की और विदेश चले गए, उनके दिल में यह बात पहुंचेगी कि नहीं पहुंचेगी। कभी-कभार, अपने profession में बहुत आगे निकल गए और निकलना भी है। हम नहीं चाहते हैं कि सब पिछड़ेपन की अवस्था में हमारे साथी रहें। लेकिन कभी हम भी तो यार दोस्तों के साथ छुट्टी मनाने जाते हैं। कितने भी पेशेंट क्यों न हो, कितनी भी बीमारियों की संभावना क्यों न हो, लेकिन जिंदगी ऐसी है कि कभी न कभी उसकी चेतना अगले 7 दिन, 10 दिन अपने साथियों के साथ बाहर जाते हैं। कभी-कभार ये भी तो सोचिये कि भले ही बहुत बड़ी जगह पर बैठेंगे, लेकिन कम से कम सब साथियों को ले करके साल में एक बार पांच दिन, सात दिन दूर-सुदूर जंगलों में जा करके, गरीबों के साथ बैठ करके, मेरे पास जो ज्ञान है, अनुभव है, कहीं उनके लिए भी तो कर पाएं। मैं सात दिन, 365 दिन करने की जरूरत नहीं है, न कर पाएं, लेकिन ये तो कर सकते हैं। अगर इस प्रकार का हम संकल्प करके जाते हैं तो इतनी बड़ी शक्ति अगर लगती है। समाज की शक्ति से बड़ी कोई शक्ति नहीं हो सकती है। हम एक समाज के बहुत चेतनमंद ऊर्जा हैं। हम क्या कुछ नहीं कर सकते हैं इस भाव को लेकर अगर हम चलते हैं तो हम बहुत बड़ी सेवा समाज की कर सकते हैं।

कभी-कभार मैंने देखा है, सफल डॉक्टर और विफल डॉक्टर के बीच में आपने अंतर कभी देखा है क्या? कुछ डॉक्टर होते हैं जो बीमारी के संबंध में बहुत focused होते हैं, और इतनी गहराई से उन चीजों को handle करते हैं, और उनके profession में उनकी बड़ी तारीफ होती है। भाई, देखिए इस विषय में तो इन्हीं को पूछिए। consult करना है तो उनको

पूछिए। लेकिन कभी-कभार उसकी सीमा आ जाती है।

दूसरे प्रकार के डॉक्टर होते हैं। वे बीमारी से ज्यादा बीमार के साथ जुड़ते हैं। यह बहुत बड़ा फर्क होता है। बीमारी से जुड़ने वाला बहुत Focused activity करके बीमारी को Treat करता है, लेकिन वो डॉक्टर जो बीमार से जुड़ता है, वो उसके भीतर बीमारी से लड़ने की बहुत बड़ी ताकत पैदा कर देता है। और इसलिए डॉक्टर के लिए यह बहुत बड़ी आवश्यकता होती है कि वह उस इंसान को इंसान के रूप में Treat कर रहा है, कि उसके उस पुर्जे को हाथ लगा रहा है, जिस पुर्जे की तकलीफ है? मैं नहीं मानता हूँ कि वो डॉक्टर लोकप्रिय हो सकता है। वह सफल हो सकता है। डॉक्टर का लोकप्रिय होना बहुत आवश्यक होता है, क्योंकि सामान्य व्यक्ति डॉक्टर के शब्दों पे भरोसा करता है।

हमें भी अंदाज नहीं होता है। हम कहते हैं तो कह देते हैं कि देखो भई, जरा इतना संभाल लेना। बहुत पेशेंट होते हैं जो, उस एक शब्द को घोष वाक्य मान करके जिंदगी भर के लिए स्वीकार कर लेते हैं। तब जा करके हमारा दायित्व कितना बढ़ जाता है। और इसलिए हमें उस डॉक्टर समूहों की आवश्यकता है, जो सिर्फ बीमारों की नहीं, बीमारी की नहीं, लेकिन पेशेंट के confidence level को Build up करने की दृष्टि से जो कदम उठाए जाएं। और मैं नहीं जानता कि जब आप पढ़ते होंगे, तब classroom में ये बातें आई होगी। क्योंकि आपको इतनी चीजें देखनी होती होगी, क्योंकि भगवान ने शरीर में इतनी चीजें भर रखी हैं, कि उसी को समझते-समझते ही कोर्स पूरा हो जाता है। सारे गली-मोहल्ले में Travel करते-करते पता नहीं कहां निकलोगे आप? इसलिए ये बहुत बड़ी आवश्यकता होती है कि मैं इस क्षेत्र में जा रहा हूँ, तो मैं एक समाज की जिम्मेवारी ले रहा हूँ। और समाज की जिम्मेवारी ने निभाने के लिए हम कोशिश कर रहे हैं।

हमारे देश में by and large, पहले के लोग थे, जो रात में भी मेहनत कर करके रिकॉर्ड मेंटेन करते थे। और वो पेशेंट की history, बीमारी की history, कभी-कभार भविष्य के लिए बहुत काम आती है। आज युग बदल चुका है। Digital Revolution एक बहुत बड़ी ताकत है। एक डॉक्टर के नाते मैं अभी से दो या तीन क्षेत्रों में focus करके case history के रिकॉर्ड्स बनाता चलूँ, बनाता चलूँ, बनाता चलूँ। उसका analysis करता चलूँ। कभी-कभार मेरे सीनियरों से उसका debate करूँ, चर्चा करूँ। science Magazines के अंदर मेरे Article छापे, इसके लिए आग्रही बनो।

भारत के लिए बहुत अनिवार्य है दोस्तों कि हमारे Medical Profession के लोग, अमेरिका के अंदर उसका बड़ा दबदबा है। दुनिया के कई देश ऐसे हैं, कि गंभीर से गंभीर बीमारी हो, अस्पताल में आपरेशन थियेटर में ले जाते हों, लेकिन जब तक वो हिन्दुस्तानी डॉक्टर का चेहरा नहीं देखते हैं, तब तक उनका विश्वास नहीं बढ़ता है। यह हमने achieve किया है। By and large, हर पेशेंट विश्व में जहां भी उसको परिचय आया, कुछ ऐसा नहीं यार, आप तो हैं, लेकिन जरा उनको बुला लीजिए। ये कोई छोटी बात नहीं है। लेकिन, हम Research के क्षेत्र में बहुत पीछे हैं। और Research के क्षेत्र में यह आवश्यक है कि हम Case history के प्रति ज्यादा Conscious बनें। हम पेशेंट की हर चीज को बारीकी से लिखते रहें, analysis करते रहें, 10 पेशेंट को देखते रहें। हो सकता है कि धीरे-धीरे 2-4 साल की आपकी इस मेहनत का परिणाम यह आएगा कि आप मानव जाति के लिए बहुत बड़ा Contribute कर सकते हैं। और हो सकता है कि आपमें से कोई Medical Science का Research Scientist बन सकता है।

मानव जाति के कल्याण के लिए मैं समस्याओं को Treat करता रहूँ, एक रास्ता है, लेकिन मैं मानव जाति की संभावित समस्याओं के समाधान के लिए कुछ नई चीजें खोज कर दे दूँ। हो सकता है, मेरा Contribution बहुत बड़ा हो सकता है। और ये काम कोई दूसरा नहीं करेगा। और आज Medical Science, आज से 10 साल पहले और आज मैं बहुत बड़ा बदलाव आया है। Technology ने बहुत बड़ी जगह ले ली है, Medical Science में।

एक जमाना था, जब गांव में एक वैद्यराज हुआ करते थे, और गांव स्वस्थ होता था। गांव बीमार नहीं होता था। आज आंख का डॉक्टर अलग है, कान का अलग है। वो दिन भी दूर नहीं, बाईं आंख वाला एक होगा, दाईं आंख वाला दूसरा होगा। लेकिन एक वैद्यराज से गांव स्वस्थ रहता था और बायें-दायें होने के बावजूद भी स्वस्थता के संबंध में सवालिया निशान लगा रहता है। तब जा करके बदले हुए समय में Research में कहीं न कहीं हमारी कमी महसूस होती है। Technological development इतना हो रहा है, आप मुझे बताइए, अगर Robot ही ऑपरेशन करने वाला है तो आपका क्या होगा? एक programming हो जाएगा, programme के मुताबिक robot जाएगा जहां भी काटना-वाटना है, काट करके बाहर निकल जाएगा, बाद में paramedical staff हैं, वहीं देखता रहेगा। आप तो कहीं निकल ही जाएंगे।

मैं आपको डरा नहीं रहा हूँ। लेकिन इतना तेजी से बदलाव आ रहा है, आपमें से कितने लोग जानते हैं, मुझे मालूम नहीं है। एक बहुत बड़ा साइंस, जो कि हम सदियों पहले जिसके विषय में जानकारी रखते थे, बताई जाती थी हमारे पूर्वजों को, वह आज medical science में जगह बना रहा है। पुराने जमाने में ऋषि-मुनियों की तस्वीर होती थी, उसके ऊपर एक aura हुआ करता था, कभी हमको लगता था कि aura अच्छी designing के लिए शायद paint किया गया हो। लेकिन आज



विज्ञान स्वीकार करने लगा है कि aura Medical Science के लिए सबसे बड़ा input बन सकता है। Kirlian Photography शुरू हुई, जिसके कारण aura की फोटोग्राफी शुरू हो गई। Aura की photography से पता चलने लगा कि इस व्यक्ति के जीवन में ये Deficiency है, शरीर में 25 साल के बाद ये बीमारी आ सकती है, 30 साल के बाद ये बीमारी आ सकती है, ओरा साइंस बहुत बड़ी बात है, वो develop हो रहा है।

आज के हमारे Medical Science के सबसे जुड़ा हुआ Aura Science नहीं है। Full Proof भले ही नहीं होगा, पर एक वर्ग है दुनिया में, विदेशों में, जो लोग इसी पर बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। अगर ये Aura Science की स्वीकृति हो गई तो शायद Medical Science की Terminology बदल जाएगी। एक बहुत बड़े Revolution की संभावना पड़ी है। हम Revolution से डरते नहीं हैं। हम चाहते हैं, Innovations होते रहने चाहिए। लेकिन चिंता ये है कि हम उसके अपने आप के साथ मेल बिठा रहे हैं कि हम उन पुरानी किताबों को पढ़ें, क्योंकि हमारे professor भी आए होंगे, वो भी वही पुरानी किताब लेके आए होंगे। उनके टीचर ने उनको दी होगी। और हम भी शायद प्रोफेसर बन गए तो आगे किसी को सरका देंगे कि देख यार, मैं यहीं पढ़ाता रहा हूं, तुम भी यही पढ़ाते रहो। तो शायद बदलाव नहीं आ सकता है।

इसलिए नित नूतन प्राणवान व्यवस्था की ओर हमारा मन रहता है, तो हम Relevant रहते हैं। हम समाज के बदलाव की स्थिति में जगह बना सकते हैं। उसे बनाने की दिशा में अगर प्रयास करते हैं तो मैं मानता हूं कि हम बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। आप एक ऐसे Institution के Students हैं, जिसने हिन्दुस्तान में अपना एक Trademark सिद्ध किया हुआ है। आज हिन्दुस्तान में कहीं पर भी अच्छा अस्पताल बनाना हो, या Medical Science में कुछ काम करना हो, कॉलेज अच्छे बनाने हो तो लोग क्या कहते हैं? पूरे देश के हर कोने में। हमारे यहां एक AIIMS बना दो। और कुछ उसे मालूम नहीं है। इतना कह दिया मतलब सब आ गया। उसको मालूम है AIIMS आया, मतलब सब आया।

इसका मतलब, आप कितने भाग्यवान हैं कि पूरा हिन्दुस्तान जिस AIIMS के साथ जुड़ना चाहता है, हर कोने में कोई कहता है, पेशेंट भी चाहता है कि यार मुझे AIIMS में Admission मिल जाए तो अच्छा होगा, Students भी चाहता है कि पढ़ने को यदि AIIMS में मिल जाए तो exposure बहुत अच्छा मिलेगा, Faculty अच्छी मिल जाए, बहुत बड़ा जीवन में सीखने को मिलेगा। आप भाग्यवान हैं, आप एक ऐसे Institution से निकल रहे हैं, जिस Institution ने देश और दुनिया में अपनी जगह बनाई है। ये बहुत बड़ा सौभाग्य ले करके आप जा रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि आपके जीवन में माध्यम से भविष्य में समाज को कुछ न कुछ मिलता रहेगा और “स्वस्थ भारत” के सपने को पूरा करने में आप भी भारत माता की संतान के रूप में, जिस समाज ने आपको इतना सारा दिया है, उस समाज को आप भी कुछ देंगे। इस अपेक्षा के साथ मैं आज, जिन्होंने यह अचीवमेंट पाई है, उन सबको हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। मेरी शुभकामनाएं हैं, और मैं आपका साथी हूं। आपके कुछ सुझाव होंगे, जरूर मुझे बताइए। हम सब मिल करके अच्छे रास्ते पर जाने की कोशिश करेंगे।

आपके बीच आने का मुझे अवसर मिला, मैं भी हैरान हूं कि मुझे क्यों बुलाया? ना मैं अच्छा पेशेंट हूं। भगवान करे, ना बनूं। डॉक्टर तो हूं ही नहीं। लेकिन मुझे इसलिए बुलाया कि मैं प्रधानमंत्री हूं। और हमारे देश का दुर्भाग्य ऐसा है कि हम लोग सब जगह पे चलते हैं। खैर, मुझे आप लोगों से मिलने का अवसर मिला, मैं आपका आभारी हूं।

धन्यवाद।

\*\*\*

अमित कुमार / महिमा वशिष्ठ / शिशिर चौरसिया, सोनिका

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

09-नवंबर-2014 12:35 IST

**छठी विश्व आयुर्वेद कांग्रेस के समापन समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिये गये भाषण का मूल पाठ**

मंत्री परिषद के मेरे साथी डॉक्टर हर्षवर्धन जी, मंचस्थ सभी महानुभाव और आयुर्वेद को समर्पित उपस्थित सभी वरिष्ठ महानुभाव

यहाँ घोषणा हो रही थी कि तीन दिन यहाँ मंथन हुआ है और मंथन के बाद अमृत मिला है; तो मैं भी इस अमृत को लेने आया हूँ, कुछ बूँद मेरे नसीब में भी आएँगे, अब पूरा कुंभ भरकर के मिलने की संभावना रही है कि नहीं मुझे नहीं मालूम नहीं है। आपकी इस बार एक theme है कि Health challenges and Ayurveda, ऐसा ही है ना कुछ! आपने बहुत सारी बातें की होगी लेकिन मुझे सबसे बड़ी challenge लगती है, वो ये लग रहा है कि हम जो आयुर्वेद से जुड़े हुए लोग हैं वो ही सबसे बड़ा challenge है। शत-प्रतिशत आयुर्वेद को समर्पित, ऐसे आयुर्वेद के डॉक्टर मिलना मुश्किल हो गया है, उसको खुद को लगता है भई अब इससे तो कोई चलने वाली गाड़ी नहीं है। अब तो एलोपैथी के रास्ते पर जाना ही पड़ेगा और वो patient को भी बता देता है कि ऐसा करते हैं शुरू के तीन दिन तो एलोपैथी ले लो बाद में आयुर्वेद का देखेंगे। मैं समझता हूँ कि आयुर्वेद के सामने ये सबसे बड़ी चुनौती यह मानसिकता है। अगर आयुर्वेद को जानने वाले व्यक्ति आयुर्वेद के प्रति प्रतिबद्धता नहीं होगी, उनका समर्पण नहीं होगा, आत्मविश्वास नहीं होगा, तो वे patient पर विश्वास कैसे भर पाएँगे। हम जब छोटे तो एक चुटकला सुना करते थे कि कोई यात्री किसी शहर में गया और किसी रेस्टोरेंट में खाना खाने गया और फिर उसने पूछा मालिक कहाँ है। तो उसने कहा मालिक सामने वाली होटल में खाना खाने गए हैं। तो उस रेस्टोरेंट में कौन खाएगा? जिसको अपने पर भरोसा नहीं है, अपने पर भरोसा नहीं है, अपनी परंपरा पर भरोसा नहीं है, वो औरों पर भरोसा नहीं जगा सकते। संकट आयुर्वेद का नहीं है, संकट आयुर्वेद वालों का है, ये बात मैं नहीं जानता हूँ आपको अच्छी लगी कड़वी लगी लेकिन कड़वी लगी, तो मैं समझता हूँ कि मेरी पूरी तरह आयुर्वेद के सिद्धांतों के आधार पर बोल रहा हूँ कि आयुर्वेद के सिद्धांतों में कड़वा जो होता है, ultimately मीठा बना देता है।

बहुत से लोगों से मैं मिलता हूँ, बहुत से लोगों से बातें करता हूँ मैं पिछली बार जब एक बार जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था, तो मैंने पूरे देश में ऐसे आयुर्वेद के विशेषज्ञों को बुलाया था। अब जबकि उस समय तो वो मेरा क्षेत्र नहीं था। एक राज्य का काम करता था लेकिन आयुर्वेद के प्रति एक जागरूकता की आवश्यकता थी। आयुर्वेद एक ऐसा क्षेत्र नहीं है कि वो एक certified डॉक्टर तक सीमित हो। हमारे पूर्वजों ने स्वास्थ्य को जीवन का एक हिस्सा बना दिया था। आज हमने जीवनचर्या और स्वास्थ्य के लिए कहीं outsource किया हुआ है। पहले स्वास्थ्य को outsource नहीं किया गया था। उसकी जीवनचर्या का हिस्सा था और उसके कारण हर व्यक्ति हर परिवार अपने शरीर के संबंध में जागरूकता था। समस्या आए तो उपाय क्या उस पर भी जागरूक था। और उसका अनुभव आज भी आपको होता होगा।

कभी आप रेल में या बस Travel करते हो और मान लीजिए कोई बच्चा बहुत रो रहा है, तो आपने देखा होगा कि compartment में से 12-15 लोग वहाँ आ जाएंगे और तुरंत ऐसा करो इसको यह खिला दो, दूसरा कहेगा कि यह खिला दो, तीसरा कोई पुड़िया निकालकर जेब में दे देगा उसके मुँह में यह डाल दो। हम पूछते तक नहीं हैं आप डॉक्टर हैं, कौन है लेकिन जब वो कहता है तो हमें भरोसा होता है कि हां यार बच्चा चिल्ला रो रहा है, तो हो सकता है उसको यह तकलीफ होगी और यह दे देंगे तो बच्चा रोना बंद कर देगा और उसको शायद राहत हो जाएगी। यह अकसर हमने रेलवे में, बस में Travel करते हुए देखा होगा कि कोई न कोई मरीज को बीमारी हुई तो कोई न कोई पैसंजर आकर के उसका उपचार कर देता है, जबकि वो डॉक्टर नहीं है। न ही वो वैधराज है, न कही जामनगर की आयुर्वेद युनिवर्सिटी में जाकर के आया है, पर चूंकि हमारे यहाँ यह सहज स्वभाव बना हुआ था, परंपरा से स्वभाव बना हुआ था और इसलिए हमें इन चीजों का कुछ न कुछ मात्रा में समझ थी। धीरे-धीरे हमने पूरा health sector outsource कर दिया। कुछ भी हुआ तो कही से advice लेनी पड़ रही है, consultation करना पड़ता है और वो फिर जो कहे उस रास्ते पर चलना पड़ता है ठीक हो गए तो ठक है नहीं हुए तो दूसरे के पास चले जाते हैं। consultancy बदल देते हैं।

इस समस्या का समाधान, इसकी पहली आवश्यकता यह है कि मैं अगर आयुर्वेद क्षेत्र का विद्यार्थी हूँ, आयुर्वेद क्षेत्र का डॉक्टर हूँ, मैं आयुर्वेद क्षेत्र का टीचर हूँ या मैं आयुर्वेद क्षेत्र में मेडिसन का मैन्यूफैक्चरिंग करता हूँ या मैं holistic health care को promote करने वाला हूँ, मैं किसी क्षेत्र से हूँ, उसमें मेरा कोई compromise नहीं होना चाहिए। मेरी शत-प्रतिशत

प्रतिबद्धता होनी चाहिए और अगर हम शत-प्रतिशत प्रतिबद्धता लेकर चलते हैं, आप देखिए परिणाम आना शुरू हो जाएगा। कुछ न कुछ कारण negative कारण ऐसे पैदा हुए हैं कि जिसके कारण परेशान लोग, थके-हारे लोग, जिस रास्ते पर चल पड़े थे। वहां से वापस लौटकर के back to Basic तरफ जा रहे हैं holistic health care के नाम पर। उनको लग रहा है कि भई आज का जो Medical Science है शायद तुरंत हमें राहत तो दे देता होगा, लेकिन स्वास्थ्य की गारंटी नहीं देता है। अगर स्वास्थ्य की गारंटी है तो मुझे वापस holistic Health care में जाना पड़ेगा और...तो चाहे naturopathy हो, आयुर्वेद हो, या आहार-विहार के धर्म का पालन करना हो, या मुझे होम्योपैथी की ओर जाना हो कुछ-न-कुछ उस दिशा में चल पड़ता है और इसलिए और आयुर्वेद हमारे यहां तो पंचमवेद के रूप में जाना गया है। उसका यह महात्म्य रखा गया है और मूल से लेकर के फल तक प्रकृति सम्पदा का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है कि जो आयुर्वेद में काम न आता हो। मूल से लेकर के फल तक यानी हमारे पूर्वजों ने हर छोटी बात में कितना बारीकी से उसके गुणों का, उसके स्वाभाव का, उसका व्यवहार में उपयोग का अध्ययन किया होगा। तब जाकर के स्थिति बनी होगी। हम उस महान सम्पदा को आधुनिक स्वरूप में कैसे रखे। यह दूसरी चैलेंज में देखता हूं।

हम यह चाहे जब दुनिया संस्कृत पढ़ ले और श्लोक के आधार पर आयोजन को स्वीकार कर ले, तो यह संभव नहीं लगता है, लेकिन कम से कम उस महान विरासत को दुनिया आज जो भाषा में समझती है उस भाषा में तो convert किया जा सकता है। इसलिए जो इस क्षेत्र में जो काम करने वाले लोग हैं उन्होंने research करके, समय देकर के उस प्रकार की institutional framework के द्वारा इन-इन विषयों में जो भी शोध हुए हैं उसको हम कैसे रखेंगे।

एक तीसरी बात है जितने भी दुनिया में science Magazine हैं, जहां research article छपते हैं क्या हम सब मिलकर के एक movement नहीं चला सकते, एक कोशिश नहीं कर सकते, एक दबाव पैदा नहीं कर सकते, एक आयुर्वेद सत्र में काम करने वाले लोगों को शोध निबंध के लिए लगातार pressure किया जाए व्यवस्था का हिस्सा हो, उसको दो साल में एक बार अगर प्रोफेसर है, student है या final year में है किसी न किसी एक विषय पर गहराई से अध्ययन करके आधुनिक terminology में शोध निबंध लिखना ही पड़ेगा। International Magazine में वो शोध निबंध छपना ही चाहिए या तो हमें यह कहना चाहिए कि इंटरनेशनल Medicine के जितने Magazine हैं उसमें 10 Percent तो कम से कम जगह dedicate कीजिए आयुर्वेद के लिए। उनकी बराबरी में हमारे शोध निबंध अलग प्रकार के होंगे। लेकिन हमारे शोध निबंध उसके लिए जगह होगी तो दुनिया का ध्यान जाएगा, जो Medical Science में काम करते हैं कि चलिए भी 20 percent काम हमने उनके लिए हमने हमेशा-हमेशा के लिए समर्पित किया है तो 20 percent space के अंदर आयुर्वेद से संबंधित शोध निबंध आएंगे तो दुनिया Modern Medical Science के शोध निबंध पढ़ती होगी, तो कभी-कभी नजर उसकी उस पर भी जाएगी और हो सकता है इन दोनों के तरफ देखने का दृष्टिकोण उन scientist faculty का होगा, मैं समझता हूं कि आयुर्वेद को नई दिशा देने के लिए वो एक नई ताकत के रूप में उभर सकता है।

लेकिन इसके लिए किसी ने follow-up करना चाहिए कि globally level इस प्रकार के Medical Science की Magazine कितने हैं। उसमें अब तक कहीं आयुर्वेद को स्थान मिला है या नहीं मिला है। और आयुर्वेद को स्थान देना है तो उन लोगों से बात करनी होगी किसी को पत्र व्यवहार करना होगा। यानी एक हमने movement चलानी होगी कि global acceptance जहां है वहां हम अपनी जगह कैसे बनाए और मनुष्य का स्वभाव है और हमारे देश का तो यह स्वभाव है ही है, 1200 साल की गुलामी के कारण हमारी रगों में वो घुस गया है। जब तक हमारी यहां कोई बात वाया अमेरिका नहीं आती है हमें गले ही नहीं उतरती। और इसलिए अगर International Magazine में कोई बात छप गई तो आप समझ लेना साहब सारे हमारे आयुर्वेद के डॉक्टर उसका फोटो फ्रेम बनाकर के अपने यहां लगा देंगे। आप सबको जानकर मुझे मालूम नहीं है ये आयुर्वेद वालों ने इस प्रकार का अध्ययन किया है या नहीं किया है। जब पंडित नेहरू प्रधानमंत्री थे, तब उस जमाने में तो इन सारी चीजों पर समाज जीवन का रूप भी अलग प्रकार का था।

तो सरकार ने उस समय सोचा कि भई आयुर्वेद के promotion के लिए क्या किया जाए। यह हमारी इतनी बड़ी विधा नष्ट क्यों हो रही है। तो एक हाथी कमिशन बना था। जय सुखलाल हाथी करके उस समय एक केंद्र सरकार में मंत्री थे और हाथी कमिशन को काम दिया गया था कि आयुर्वेद को पुनर्जीवित करने के लिए क्या किया जाए। आयुर्वेद को प्रचारित करने के लिए क्या किया जाए। शायद वो 1960 के आसपास का वो रिपोर्ट है कभी देखने जैसा है। और उसमें रिपोर्ट में कहा गया है पहले पेज पर जो सुझाव आया है बड़ा interesting है। उसमें कहा गया कि अगर भई आयुर्वेद को आपको प्रचारित करना है तो उसके packaging को बदलना पड़ेगा, क्योंकि वो पुड़िया, वो सारे जड़ी-बूटियां, थैला भरकर के ले जाना, फिर उबालना, फिर दो लीटर पानी से उबालो, फिर वो आधा होना चाहिए, फिर रातभर रखो, फिर उबालो, फिर आधा हो। तो यह सामान्य मानवों के गले नहीं उतरता था। उन्होंने लिखा है कि इसको ऐसे पैकेजिंग व्यवस्था में रखना चाहिए, ताकि सामान्य मानव को सहज रूप से उपलब्ध हो। धीरे-धीरे-धीरे हमारे यहां बदलाव आया है। आज आयुर्वेद की दवाई खाने वालों को वो अब परेशानियां नहीं कि घर ले जाए। जड़ी-बूटियां और उबाले और फिर कुछ निकाले। अब तो उसको रेडीमेट चीजें मिल रही हैं। medicines मिल रहे हैं, गोली के रूप में मिल रहा है। यानी जिस प्रकार के एलोपैथिक

Medicine जितने form में मिलती है, उतने ही form में यह मिलने लगा है। यह जैसे एक बदलाव की आवश्यकता है।

इसलिए आयुर्वेद क्षेत्र में research करने वाले लोग, आयुर्वेद में अध्ययन करने वाले लोग और आयुर्वेदिक Medicine को manufacture करने वाले लोग उनके साल में एक-दो बार joint efforts होने चाहिए। इसलिए नहीं कि आयुर्वेद का डॉक्टर prescription लिखे उसकी कंपनी का। मैं क्या कह रहा हूँ समझें। यह बात, आपके गले नहीं उतरी। इसलिए कि और अच्छा आवश्यक परिवर्तन करते हुए production कैसे हो। दवाइयों का निर्माण कैसे हो, उस पर सोचा जाए। उसी प्रकार से आज हम जितनी मात्रा में शास्त्रों में पढ़ते थे क्या उतने Herbal Plants available है क्या। यह बहुत बड़े शोध का विषय है। कई ऐसी दवाइयां होगी जिसका शास्त्र में मूल लिखा होगा कि फलाने वृक्ष या पौधे में से या मूल में से यह दवाई बनती है। आज उस वृक्ष को ढूँढने जाओगे। उसका वर्णन देखकर के खोजोगे तो प्राप्त क्या होना, कभी-कभी मुश्किल लगता है। मुझे इस बात का अनुभव इसलिए है कि मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री था, तो मैंने एक तीर्थंकर वन बनाया था और जो 24 तीर्थंकर हुए जैन परंपरा में उनको किसी न किसी वृक्ष के नीचे आत्मज्ञान हुआ था। तो मैंने सोचा कि तीर्थंकर वन बनाऊंगा, तो इन 24 वृक्षों को लाकर के वहां लगाऊंगा। मैंने खोजना शुरू किया और मैं हैरान हो गया, मैं इंडोनेशिया तक गया खोजने के लिए, लेकिन 24 के 24 वृक्ष मुझे नहीं मिले। इसका मतलब यह हुआ कि हमारे सामने एक बहुत बड़ी चुनौती यह है कि आयुर्वेद के मूलधार जहां है, वो है herbal plantation. उसमें हम किस प्रकार से आगे बढ़े और उसमें से हम एक movement चलाए किस प्रकार से काम करें।

आप लोगों को कभी भाव नगर जाने का अवसर मिले पालिताना जैन तीर्थ क्षेत्र पर तो वहां जब मैं गुजरात में था, तो हमने पावक वन बनाया था। पालिताना की ऊंचाईयों पर जाने से पहले ही नीचे बना हुआ है। और वो गार्डन ऐसा बनाया है कि पूरे गार्डन का Landscape मनुष्य का शरीर बनाया है। बड़ा विशाल करीब दो सौ मीटर लम्बा और उसके शरीर के जो अंग हैं। उस अंग के साथ जिस औषधि का संबंध आता है, वो पौधा वहां लगाया है। अगर heart है तो heart से जुड़े हुए सारे पौधे उस जगह पर लगाए हैं। अगर घुटने हैं घुटनों के दर्द से संबंधित बाते हैं तो उस घुटना जहां हैं वहां पर वो पौधे लगाए हैं। कोई भी व्यक्ति उस गार्डन में जाकर के आएगा तो उसको सहज रूप से पता चलता है कि हां भई यह औषधि है। इससे बाद में बनने वाली औषधि मेरे शरीर के इस हिस्से को काम आती है। यानी हमने इस पुरातन ज्ञान को आधुनिक स्वरूप में किस प्रकार से लगाया जाए और यह एक सजह स्वभाव बन सकता है। बाद में विद्यार्थियों के वहां tour भी होती है। वे भी देखते हैं कि भई ये फलानी बीमारी के लिए अगर यहां पर दर्द होता है तो यह औषधि के पेड़ यहां लगाओ। उसका संबंध है। हम यदि चीजों को देखे तो हमें जानकारी होगी।

हमारे शास्त्रों में भी ये देश ऐसा है कि जिसमें करोड़ों भगवानों की कल्पना की गई है। और हमारे यहां तो जैसा भक्त वैसा भगवान है। अगर भक्त पहलवान है, तो भगवान हनुमान है। और भक्त अगर पैसों का पुजारी है, तो भगवान लक्ष्मी जी है। अगर भक्त ज्ञान में रुचि रखता है तो भगवान सरस्वती है। यानी हमारे यहां जितने भक्त, उतने भगवान इस प्रकार का माहौल है। और इसलिए एक विशेषता ध्यान में रखिए। हमारे यहां जितने भगवानों की कल्पना की गई है, हर भगवान के साथ कोई न कोई वृक्ष जुड़ा हुआ है। एक भी भगवान ऐसा नहीं होगा, कि देखिए environment Friendly society कैसी थी।

environment Friendly society की कल्पनाएं कैसी थी। कोई भी ईश्वर का ऐसा रूप नहीं है, जिसके साथ कोई न कोई पौधा न जुड़ा होगा और कोई न कोई पशुपक्षी जुड़ा न हुआ हो। ऐसा एक भी ईश्वर नहीं है हमारे यहां। यह सहज ज्ञान प्रसारित कर देने के मार्ग थे। उन्हीं मार्गों के आधार पर यह आयुर्वेद जन सामान्य का हिस्सा बना हुआ था। हमारी आस्थाएं अगर उस प्रकार की होती हैं तो हम चीजों को बदल सकते हैं। इसलिए आयुर्वेद को एक बात तो लोग मानते ही हैं कितने ही पढ़े लिखे क्यों न हो लेकिन अगर शरीर की अंतःशुद्धि करनी है तो आयुर्वेद उत्तम से उत्तम मार्ग है। करीब-करीब सब लोग मानते हैं। यह स्वीकार करके चलते हैं कि भई अंदर से सफाई करनी है तो उसी का सहारा ले लो काम हो जाएगा। जल्दी जल्दी हो जाएगा।

लेकिन आयुर्वेद के संबंध में मजाक भी बहुत होता रहता है। एक बार एक वैद्यराज के परिवार में मेहमान आने वाले थे तो उस परिवार की महिला ने अपने पतिदेव को कहा कि आज जरा बजार से सब्जी-वब्जी ले आइये मेहमान आने वाले हैं। पतिदेव वैद्यराज थे तो सब्जी खरीदने गए। जब वापस आए तो नीम के पत्ते ले आए। पत्नी ने पूछा क्यों तो बोले मैं गया था बाजार में आलू देखे तो लगा इससे तो यह बीमारी होती है, बैंगन देखे तो लगा ये बीमारी होती है, ये सब्जी देखा तो लगा, तो सब्जी नहीं दिखती थी, सब्जी में बीमारी दिखती थी और आखिरकार उसको लगा, मैं नीम के पत्ते ले आया हूँ। तो कभी-कभी ज्ञान का व्यवहारिक रास्ता भी खोजना पड़ता है। अगर ज्ञान का व्यवहारिक रास्ता नहीं होता है तो ज्ञान कभी-कभी कालवाह्य भी हो जाता है और इसलिए सहज स्वीकृत अवस्था को कैसे विकसित किया जाए इस पर हम जितना ध्यान देंगे।

मैं मानता हूँ कि आज जो दुनिया, एक बहुत बड़ा चक्र बदला है अगर गत 50 वर्ष एलोपैथिक Medicine ने जगत पर कब्जा किया है तो उससे तंग आई हुई दुनिया आज Holistic Health Care की तरफ मुड़ चुकी है। अन्न कोष और प्राणमय कोष की चर्चा आज विश्व के सभी स्थानों पर होने लगी है और medical science अपने आप को एक नए रूप में देखने लगा है। हमारे पास यह विरासत है। लेकिन इस विरासत को आधुनिक संदर्भों में फिर से एक बार देखने की आवश्यकता है। उसमें से बदलाव की जरूरत हो तो बदलाव की आवश्यकता है। और यह हम कर पाते हैं तो हमारे सामने जो challenges हैं उन challenges को हम भली-भांति, एक अच्छा, यानी लोगों में विश्वास पैदा हो, उस प्रकार से response कर सकते हैं। आयुर्वेद के साथ-साथ जीवनचर्या को भी जोड़ा गया है। अनेक प्रकार से आयुर्वेद way of life से ज्यादा जुड़ा हुआ है। शायद हमने कभी सोचा तक नहीं होगा। आज यहां बैठे हुए लोग भी कुछ बातों पर तालियां भी बजा रहे हैं। पौछे students बहुत बड़ी मात्रा में हैं। लेकिन फिर अंदर तो दिमाग थोड़ा हिलता होगा। पता नहीं career कैसी बनेगी। ये पुड़िया से जिंदगी चलेगी क्या। यह उनके दिमाग में चलता होगा जी। यहां से मंथन के बाद भी जाएंगे तो भी वो दुविधा नहीं जाएगी। यार ठीक अब डॉक्टर तो नहीं बन पाए, वैद्यराज बन रहे हैं। लेकिन अब कुछ तो गाड़ी चलाने के लिए करना पड़ेगा। लेकिन उसके बावजूद भी, मैं खासकर के इन नई पीढ़ी के लोगों को कह रहा हूँ, निराश होने का कोई कारण नहीं है। हमारे सामने एक उदाहरण है, उस उदाहरण से हम सीख सकते हैं।

हमारे देश में भी जिस भारत की धरती पर योग की कल्पना थी, जिस भारत ने अपने योग विश्व को दिया, हम लोगों ने मान लिया था योग हमारा काम नहीं है यह तो हिमालय में रहने वाले ऋषि मुनियों का गुफाओं में बैठकर के साधना करने वाला प्रकल्प है। यही हमने सोच लिया था और एक प्रकार से सामान्य जन उससे अलग रहता था। क्या कभी किसी ने कल्पना की थी कि आज से 30 साल पहले योग की जो अवस्था थी। आज योग विश्वभर में चर्चा के केंद्र में कैसे पहुंचा। क्या कारण है कि आज दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां अपनी कंपनी में जिस प्रकार से CEO रखते हैं, उसी प्रकार से एक Stress management की institute भी रखते हैं। क्यों? frustration के कारण, depression के कारण व्यक्ति के जीवन में जो संकटों की घड़ियां आती हैं तब जाकर के वो शाश्वत शांति का रास्ता खोजता है और उसके लिए विश्व का एक श्रद्धा का केंद्र बना कि योगा से शायद मुझे relief मिल जाएगा।

मैंने बहुत रास्ते अपना लिये, मैं drugs तक चला गया लेकिन मुझे संतोष नहीं मिला। अब मैं वापस यहां चलूँ, मुझे मिल जाएगा। जिस योगा से हम भी जुड़ने को तैयार नहीं थे, उस योगा से अगर आज दुनिया जुड़ गई है तो जिस आयुर्वेद से हमारे आज उदासीनता है कल उस आयुर्वेद से भी दुनिया जुड़ सकती है। हमारे सामने जीता-जागता उदाहरण है। यह आत्म विश्वास जब हमारे भीतर होगा तभी तो हम सामान्य मानव के भीतर आयुर्वेद के प्रति आस्था पैदा कर सकते हैं। इसलिए हमारी यह कोशिश रही, तो मुझे विश्वास है कि उसका फायदा होगा।

आज भी दुनिया में, herbal medicine के क्षेत्र में कानूनों की रूकावट के कारण जब हमारी herbal medicine export होती है तो लिखा जाता है कि additional food के रूप में उसको लिखा जाता है। अतिरिक्त आहार के रूप में उसको भेजा जाता है। medicine के रूप में आज भी उसको स्वीकृति नहीं मिली है। आप जानते हैं pharmaceutical Industry की ताकत कितनी है। वो आपको ऐसे आसानी से घुसने नहीं देंगे। वे किसी भी हालत में आपको medicine की ग्लोबल global acceptance वाली स्वीकृति नहीं देंगे। बड़ी challenge है, लेकिन अगर सामान्य मानव को इसमें विश्वास हो गया तो कितनी ही बड़ी ताकतवर संगठन हो, आपको रोक नहीं सकता है।

एक संकट और, मैं देख रहा हूँ। आयुर्वेद अच्छा करे, करना भी चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से हमने आयुर्वेद और एलोपैथी दोनों जैसे कोई दुश्मन हो इस प्रकार का माहौल बना दिया। हमारी पूरी Terminology ऐसी है। यह Terminology बदलनी होगी। हम, हम भी तो विवाद करते रहते हैं भई आयुर्वेद जो है वो मूल से बीमारी को दूर करता है और एलोपैथी तो भई ऊपर ऊपर relief करता है और दुष्कारते हैं और फिर वो ही करते हैं। जब तक हम यह न कहे कि एलोपैथी एक रास्ता है लेकिन आयुर्वेद यह जीवन पद्धति है। यह way of life है। हमारा पूरा फोकस आयुर्वेद को emphasis बदलना होगा। हम एलोपैथी के साथ संघर्ष का चेहरा लेकर के चलेंगे तो उस लड़ाई से हमें फायदा नहीं है। हमें फायदा इस बात में है। और जिस प्रकार से योगा ने अपनी जगह बना ली आयुर्वेद भी अपनी जगह बना सकता है। अगर नई बीमारियां आएंगी तो एलोपैथी वाले संभाल लेंगे। लेकिन बीमारियां न आए वो तो आयुर्वेद ही संभाल सकता है। और एक बार सामान्य मानव को भी विश्वास हो गया कि हां यह रास्ता है आप देखिए बड़े से बड़ा डॉक्टर क्यों न हो, सर्जन हो लेकिन उसके घर में पोता होता है और पोते को दांत आने वाले होते हैं और अगर loose motion शुरू हो जाता है तो शहर का सबसे बड़ा सर्जन भी होम्योपैथी के डॉक्टर के यहां जाता है। उस बच्चे को गोलियां खिलाने के लिए ताकि उसके दांत आए और loose motion न हो। यही होता है ना। वो अपना रास्ता छोड़कर के अपने बच्चे की भलाई के लिए रास्ता बदलता है। विश्वास बहुत बड़ी चीज है।

मैं एक घटना से बड़ा परिचित हूँ। मैं गुजरात में रहता था तो वहां एक डॉक्टर वणीकर करके, अब तो उनका स्वर्गवास हो गया। बहुत बड़े, शायद वो गुजरात के पहले पैथोलॉजी के एम.एस. थे और विदेशों में पढ़कर के आए थे। उनका पैथोलॉजी

लेबोरेट्री चलता था। उनके परिवार में रिश्तेदारी में एक बच्चा बचपन में बीमार हो गया। बहुत छोटा बालक था। शायद दो तीन-महीने हुए होंगे और कुछ ठीक ही नहीं होता था। तो एक वैद्यराज के पास ले गए। सारा परिवार एलोपैथी Medical Science के दुनिया के लोग थे। थक गए तो एक वैद्यराज के पास ले गए। वैद्यराज के पास ले गए तो उस वैद्यराज जी को मैं जानता था। तो बच्चे को देखा उन्होंने और उन्होंने अंदर से पत्नी को कहा कि ऐसा करोगे शिरा बनाकर ले आओ। हलवा बनाकर ले आओ। तो यह कहने लगे नहीं-नहीं हम लोग तो नाश्ता करके आए हैं हलवा-वल्वा नहीं। मैं तुम्हारे लिए नहीं बना रहा हूं, मैं बच्चे के लिए बना रहा हूं। फिर मैंने बच्चा तो तीन महीने का है उसको हलवा खिलाओगे आप। लेकिन जो भी औषधी वगैरह डालनी होगी उनकी पत्नी को मालूम होगा, तो चम्मचभर हलवा बनाकर के ले आई और खुद वैद्यराज जी ने उस बच्चे को उंगली पर लगा लगाकर के, उसके मुंह में चिपकाते रहे। उसको थोड़ा-थोड़ा आधे घंटे तक कोशिश कर करके थोड़ा बहुत डाला। तीन दिन के अंदर उसके जीवन में परिवर्तन आना शुरू हो गया। यह डॉक्टर मुझे लगातार बताते रहते थे कि हम एलोपैथी की दुनिया के इतने बड़े लोग हमारे अपने पोते को ठीक नहीं कर पा रहे थे उन्होंने एक चम्मचभर हलवा खिलाकर के बिल्कुल उसे एकदम से सशक्त बना दिया। कहने का तात्पर्य है कि इस शास्त्र में कोई ताकत तो है। मुसीबत, हमारे भरोसे की है। एक बार हमारा भरोसा हो जाए, तो यह ताकत चौगुना हो जाएगी और जगत उसको way of life के रूप में स्वीकार करेगा और उसके कारण हम स्वस्थ की दृष्टि से एक स्वस्थ समाज के लिए।

दूसरा सबसे बड़ी बात है, सबसे सस्ते में सस्ती दवाई है। महंगी दवाई नहीं है। मैं भी अब इन दिनों चुनाव में भाषण करता हूं, गला खराब होता है तो पचासों फोन आते हैं, आप ऐसा कीजिए हल्दी ले लीजिए। अब वो करने वाले को मालूम नहीं है कि हल्दी खाने से गले को क्या होता है क्या नहीं होता। लेकिन उसको मालूम गला खराब हुआ हल्दी ले लो और आप भाषण करते रहो। कहने का तात्पर्य है कि इतना सहज व्यवस्था हमारी विकसित हुई थी उसमें फिर एक बार प्राण भरने की आवश्यकता है।

मैं समझता हूं कि आपके इस दो-तीन दिन के समारोह में बहुत सी ऐसी चीजें आपके ध्यान में आई होगी। उसके आधार पर आप कोई न कोई योजना बनाएंगे। भारत सरकार के रूप में इस प्रकार की महत्वकांक्षा आपकी योजनाओं के रूप में पूरा सहयोग रहेगा, उसको आगे बढ़ाने में पूरा समर्थन रहेगा। मेरी आप सबको स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं हैं, तो डॉक्टर का स्वास्थ्य पहले अच्छा रहना चाहिए ना और दूसरा आपसे मेरी आग्रह भरी विनती है कि आप आयुर्वेद को समर्पित भाव से ही स्वीकार कीजिए। सिर्फ एक profession के रूप में नहीं। एक समाज कल्याण के लिए बहुत बड़ा परिवर्तन लाने के लिए है। इस विश्वास से आगे बढ़िए मुझे आपके बीच आने का अवसर मिला। यह समापन सम्पन्न हो रहा है। मेरी आप सबको बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

धीरज सिंह/ अमित कुमार/ हरीश जैन/ रजनी/ तारा